Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

अटल बिहारी वाजपेई के शासनकाल में जनकल्याणकारी योजनाओं पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन का प्रभाव: एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. राकेश कुमार जायसवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय राजनीति में विचारधारा और नीति-निर्माण के बीच संबंध हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। विशेष रूप से उन राजनीतिक धाराओं में, जो अपने वैचारिक स्रोतों को भारतीय दार्शनिक परंपरा, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक वास्तविकताओं से ग्रहण करती हैं, नीति का मूल्यांकन केवल प्रशासनिक दक्षता के आधार पर नहीं किया जा सकता; उसके पीछे निहित दृष्टिकोण और मानवीय उद्देश्य भी समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। भारतीय जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी की वैचारिक दिशा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के "एकात्म मानववाद" का केंद्रीय स्थान है। यह दर्शन न केवल पश्चिमी पूंजीवाद और मार्क्सवादी समाजवाद दोनों के प्रति एक वैकल्पिक भारतीय दृष्टि प्रस्तुत करता है, बल्कि विकास, समाज, व्यक्ति, राज्य और राष्ट्र के संबंधों की एक समग्र व्याख्या भी देता है। अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में 1998 से 2004 तक की सरकार भारतीय राजनीति के इतिहास में ऐसे कालखंड के रूप में देखी जाती है, जब उदारीकरणोत्तर भारत में विकास की प्रक्रिया को बुनियादी ढांचे, मानव संसाधन, ग्रामीण संपर्क, खाद्य सुरक्षा और सामाजिक अवसरों के विस्तार के साथ जोड़ा गया। यद्यपि वाजपेयी सरकार गठबंधन राजनीति की सीमाओं के भीतर कार्य कर रही थी, फिर भी उसके अनेक नीति-निर्णयों और जनकल्याणकारी कार्यक्रमों में एकात्म मानववाद के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सर्व शिक्षा अभियान, स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना, अंत्योदय अन्न योजना और राष्ट्रीय कृषि नीति जैसी पहलों में केवल आर्थिक विस्तार का लक्ष्य नहीं था, बल्कि विकास को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने, क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने, ग्रामीण भारत को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने और मानव-केंद्रित नीति-चिंतन को संस्थागत रूप देने का प्रयास भी था।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि वाजपेयी शासनकाल की प्रमुख जनकल्याणकारी योजनाएँ किस प्रकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद से प्रेरित थीं। यह अध्ययन इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि वाजपेयी सरकार की नीतियाँ शुद्ध अर्थों में वैचारिक पुनरावृत्ति नहीं थीं, बल्कि उन्होंने एकात्म मानववाद के प्रमुख सिद्धांतों—समग्र विकास, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण, स्वदेशी तथा मानव की गरिमा—को समकालीन शासन और विकास की भाषा में रूपांतरित करने का प्रयास किया। हालांकि इन योजनाओं के क्रियान्वयन में अनेक व्यावहारिक सीमाएँ और विरोधाभास भी रहे, फिर भी समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि वाजपेयी शासनकाल भारतीय राजनीतिक विचार और सार्वजनिक नीति के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: अटल बिहारी वाजपेई, दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, अंत्योदय, जनकल्याणकारी योजनाएँ, ग्रामीण विकास, समग्र विकास, विकेंद्रीकरण

1. प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राज्य ने विकास को अपने केंद्रीय लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया, किंतु इस विकास की अवधारणा को लेकर विभिन्न वैचारिक धाराओं में मतभेद बना रहा। एक ओर नेहरूवादी समाजवाद, नियोजन और सार्वजनिक क्षेत्र आधारित विकास मॉडल था; दूसरी ओर बाद के दशकों में उदारीकरण, निजीकरण और

वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ उभर कर सामने आईं। इन दोनों के बीच भारतीय राजनीतिक चिंतन की एक तीसरी धारा भी मौजूद रही, जिसने विकास को केवल उत्पादन, आय और पूँजी निर्माण के संदर्भ में नहीं, बल्कि मनुष्य, समाज, संस्कृति और राष्ट्र की एकात्मता के संदर्भ में समझने का प्रयास किया। इस धारा के सर्वाधिक प्रभावशाली प्रवक्ता पंडित दीनदयाल उपाध्याय थे, जिन्होंने "एकात्म मानववाद" के माध्यम से भारतीय संदर्भ में एक वैकल्पिक विकास-दर्शन प्रतिपादित किया।

एकात्म मानववाद का मूल आग्रह यह था कि व्यक्ति को केवल आर्थिक प्राणी के रूप में नहीं देखा जा सकता। मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित अस्तित्व है; इसलिए विकास भी बहुआयामी, संतुलित और मानवीय होना चाहिए। यह दर्शन समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँचाने, स्थानीय संस्थाओं को सशक्त बनाने, सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करने और स्वदेशी क्षमता के आधार पर आत्मनिर्भर समाज बनाने पर बल देता है। भारतीय जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी के वैचारिक निर्माण में इस दर्शन की महती भूमिका रही। अटल बिहारी वाजपेई का शासनकाल ऐसे समय में आया जब भारत आर्थिक उदारीकरण के एक नए चरण से गुजर रहा था। वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ाव बढ़ रहा था, बुनियादी ढांचे की भारी कमी महसूस की जा रही थी, ग्रामीण-शहरी असमानता स्पष्ट थी, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा जैसे प्रश्न गंभीर बने हुए थे, और गठबंधन राजनीति के बीच दीर्घकालिक नीतियों को लागू करना आसान नहीं था। इन चुनौतियों के बीच वाजपेयी सरकार ने कई ऐसे कार्यक्रम आरंभ किए, जिनका प्रभाव व्यापक और दीर्घकालिक रहा। इस शोधपत्र की केंद्रीय जिज्ञासा यह है कि क्या वाजपेयी शासनकाल की जनकल्याणकारी योजनाएँ केवल प्रशासनिक और आर्थिक अनिवार्यताओं का परिणाम थीं, या उनमें दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का वैचारिक प्रभाव भी उपस्थित था। दूसरे शब्दों में, यह अध्ययन राजनीति, विचारधारा और शासन-व्यवहार के बीच संबंधों का परीक्षण करता है। यह जानना आवश्यक है कि क्या अंत्योदय जैसी अवधारणा अंत्योदय अन्न योजना में प्रत्यक्ष रूप से साकार होती है; क्या ग्रामीण संपर्क और सड़क निर्माण जैसी परियोजनाएँ केवल विकास-परियोजनाएँ थीं, या वे समाज के दूरस्थ और वंचित समूहों को राष्ट्रीय जीवनधारा से जोड़ने का प्रयास भी थीं; क्या शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने की दिशा में सर्व शिक्षा अभियान मानव-केंद्रित विकास के व्यापक ढाँचे का अंग था।

यह अध्ययन इसी समालोचनात्मक दृष्टि से वाजपेयी शासनकाल की प्रमुख जनकल्याणकारी योजनाओं का परीक्षण करता है। इसका उद्देश्य किसी राजनीतिक प्रशंसा या आलोचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समझना है कि भारत में वैचारिक दर्शन किस प्रकार नीति-निर्माण को प्रभावित करते हैं और शासन के क्षेत्र में अपने व्यावहारिक रूप धारण करते हैं।

2. शोध के उद्देश्य

इस शोधपत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- पहला, पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद की मूल अवधारणाओं और उसके दार्शनिक आधार का विश्लेषण करना।
- दूसरा, अटल बिहारी वाजपेई सरकार के शासनकाल में लागू प्रमुख जनकल्याणकारी योजनाओं का तथ्यात्मक और नीतिगत अध्ययन करना।
- तीसरा, यह परीक्षण करना कि इन योजनाओं में एकात्म मानववाद के प्रमुख तत्व—समग्र विकास, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण और स्वदेशी—किस सीमा तक परिलक्षित होते हैं।
- चौथा, योजनाओं के क्रियान्वयन, उपलब्धियों और सीमाओं का समालोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- पाँचवाँ, भारतीय राजनीतिक विचार और राज्य की सार्वजनिक नीतियों के अंतर्संबंध को समझना।

3. शोध पद्धति

यह शोधपत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मूल लेखन, विशेषकर "एकात्म मानववाद", अटल बिहारी वाजपेई के भाषणों और नीतिगत वक्तव्यों, भारत सरकार के आधिकारिक दस्तावेजों, योजना आयोग की रिपोर्टों, मंत्रालयों के दिशा-निर्देशों, विद्वानों के शोधपत्रों, पुस्तकों और समकालीन विश्लेषणों का उपयोग किया गया है।

अनुसंधान की प्रकृति वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक है। पहले चरण में एकात्म मानववाद की वैचारिक रूपरेखा को स्पष्ट किया गया है। दूसरे चरण में वाजपेयी शासनकाल की प्रमुख योजनाओं का संक्षिप्त नीतिगत परिचय दिया गया है। तीसरे चरण में इन योजनाओं का विश्लेषण एकात्म मानववाद के सिद्धांतों की कसौटी पर किया गया है। अंत में आलोचनात्मक विवेचना के माध्यम से यह देखा गया है कि विचारधारात्मक प्रेरणा और प्रशासनिक वास्तविकता के बीच किस प्रकार का संबंध स्थापित हुआ।

इस शोध की सीमा यह है कि यह प्राथमिक क्षेत्रीय सर्वेक्षण या लाभार्थी-आधारित अनुभवजन्य अध्ययन पर आधारित नहीं है। अतः निष्कर्ष मुख्यतः दस्तावेजीय और वैचारिक विश्लेषण पर आधारित हैं। फिर भी, उपलब्ध स्रोतों के आधार पर यह अध्ययन नीति और दर्शन के संबंधों को समझने के लिए एक विश्वसनीय ढाँचा प्रस्तुत करता है।

4. एकात्म मानववाद: एक वैचारिक रूपरेखा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने 1965 में "एकात्म मानववाद" का प्रतिपादन करते हुए भारतीय राजनीति और अर्थनीति के सामने एक वैकल्पिक वैचारिक दिशा प्रस्तुत की। उनका मानना था कि पश्चिम से आयातित पूँजीवाद और समाजवाद दोनों भारतीय समाज की प्रकृति, उसकी सांस्कृतिक चेतना और उसके सामुदायिक स्वरूप के अनुरूप नहीं हैं। पूँजीवाद व्यक्ति को अत्यधिक स्वार्थपरक आर्थिक इकाई बना देता है, जबकि समाजवाद व्यक्ति को राज्य के अधीन एक मात्र साधन में परिवर्तित कर देता है। उपाध्याय इन दोनों के स्थान पर ऐसे समाज-दर्शन की वकालत करते हैं जिसमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति के बीच संतुलित और जैविक संबंध स्थापित हो।

एकात्म मानववाद की पहली केंद्रीय अवधारणा समग्र विकास है। उपाध्याय के अनुसार मनुष्य केवल पेट भरने वाला प्राणी नहीं है; उसके पास शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित व्यक्तित्व है। इसलिए विकास को केवल आय, उपभोग या उत्पादन के संदर्भ में परिभाषित करना अधूरा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, नैतिकता, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान—ये सभी विकास के समान रूप से महत्वपूर्ण आयाम हैं। इस दृष्टि से विकास का लक्ष्य केवल भौतिक संपन्नता नहीं, बल्कि संतुलित मानवीय उत्कर्ष है। दूसरी अवधारणा अंत्योदय है। अंत्योदय का शाब्दिक अर्थ है समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय। यह विचार भारतीय दार्शनिक और नैतिक परंपरा से जुड़ा हुआ है, किंतु उपाध्याय ने इसे आधुनिक नीति-निर्माण का केंद्रीय मानदंड बनाया। किसी भी सरकार की सफलता इस बात से आँकी जानी चाहिए कि उसने समाज के सबसे कमजोर, उपेक्षित और वंचित व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँचाया या नहीं। अंत्योदय इस अर्थ में मात्र गरीबी-उन्मूलन कार्यक्रम नहीं, बल्कि शासन की नैतिक दिशा है।

तीसरी अवधारणा विकेंद्रीकरण है। उपाध्याय का मानना था कि अत्यधिक केंद्रीकरण समाज और राज्य दोनों के लिए हानिकारक है। स्थानीय समुदायों, ग्राम संस्थाओं और स्वशासी संरचनाओं को शक्ति मिलनी चाहिए। विकास योजनाएँ ऊपर से थोपी हुई न होकर नीचे से संचालित हों। यह विचार केवल प्रशासनिक सुविधा का प्रश्न नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक सहभागिता और सामाजिक स्वामित्व का प्रश्न भी है।

चौथी अवधारणा स्वदेशी है। स्वदेशी का अर्थ संकीर्ण आर्थिक बंदिश नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों, स्थानीय कौशल, राष्ट्रीय आवश्यकताओं और सांस्कृतिक यथार्थ के अनुरूप विकास-नीति बनाना है। इसका उद्देश्य आत्मनिर्भरता, संतुलित उत्पादन और विदेशी निर्भरता को सीमित करना है। उपाध्याय का स्वदेशी न तो तकनीकी प्रगति का विरोध

करता है और न ही अंतरराष्ट्रीय संपर्क का; वह केवल यह आग्रह करता है कि नीति का केंद्र भारतीय समाज की जरूरतें हों, न कि बाहरी मॉडल।

एकात्म मानववाद की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह राज्य को सर्वेसर्वा नहीं मानता। समाज की अपनी सजीव शक्ति होती है और राज्य को उस समाज की सेवा करनी चाहिए, न कि उसे नियंत्रित कर लेना चाहिए। इस दृष्टि से यह दर्शन कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को स्वीकार करता है, लेकिन उसे समाज-निरपेक्ष नौकरशाही तंत्र में बदलने का समर्थन नहीं करता।

यदि इस दर्शन को समकालीन सार्वजनिक नीति की भाषा में रूपांतरित किया जाए, तो इसके मुख्य संकेतक होंगे—समावेशी विकास, गरीब-केंद्रित नीति, ग्रामोन्मुखी विकास, मानव पूँजी निर्माण, आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता और संवेदनशील शासन। यही कारण है कि जब वाजपेयी शासनकाल की योजनाओं का विश्लेषण किया जाता है, तो उनमें एकात्म मानववाद के अनेक तत्व परिलक्षित होते दिखाई देते हैं।

5. वाजपेयी शासनकाल का राजनीतिक-आर्थिक संदर्भ

अटल बिहारी वाजपेई का शासनकाल भारतीय राजनीति में कई दृष्टियों से संक्रमणकाल था। एक ओर भारत आर्थिक उदारीकरण के बाद नए विकासपथ पर अग्रसर था; दूसरी ओर ग्रामीण संकट, बुनियादी अवसंरचना की कमी, शिक्षा और सामाजिक अवसरों की विषमता, और क्षेत्रीय असमानताएँ गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई थीं। इसी दौरान भारत ने परमाणु परीक्षण किए, कारगिल युद्ध का सामना किया, अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों और वैश्विक दबावों के बीच अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखा, और साथ ही आर्थिक सुधारों तथा सामाजिक योजनाओं दोनों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि वाजपेयी सरकार एक बहुदलीय गठबंधन का नेतृत्व कर रही थी। ऐसी स्थिति में तीव्र वैचारिक कार्यक्रम लागू करना आसान नहीं था। फिर भी इस सरकार ने नीति के स्तर पर ऐसा संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया जिसमें बुनियादी ढांचे का विस्तार, बाजारोन्मुख आर्थिक सुधार, सामाजिक क्षेत्र में निवेश, और गरीबोन्मुखी योजनाएँ साथ-साथ चलें। यह संतुलन अपने आप में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एकात्म मानववाद के उस आग्रह से मेल खाता है जिसमें समाज और अर्थव्यवस्था के विभिन्न पक्षों को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक माना जाता है।

वाजपेयी की राजनीतिक शैली भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। वे वैचारिक रूप से स्पष्ट होने के साथ-साथ व्यवहारिक राजनीति के समर्थक थे। इसलिए उनकी सरकार की योजनाओं में विचारधारा प्रत्यक्ष नारे के रूप में कम और नीतिगत प्राथमिकता के रूप में अधिक दिखाई देती है। यही कारण है कि उनके शासनकाल की जनकल्याणकारी योजनाओं का विश्लेषण करते समय उनके पीछे मौजूद विचारधारात्मक प्रेरणा की पहचान करना शोध की दृष्टि से आवश्यक हो जाता है।

6. वाजपेयी शासनकाल की प्रमुख जनकल्याणकारी योजनाएँ और उन पर एकात्म मानववाद का प्रभाव

6.1 प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना 2000 में आरंभ की गई और इसका उद्देश्य उन ग्रामीण बस्तियों को सर्व मौसमीय सड़कों से जोड़ना था जो अब तक संपर्कहीन थीं। पहली दृष्टि में यह एक अवसंरचनात्मक योजना प्रतीत होती है, किंतु इसके सामाजिक और मानवीय प्रभाव अत्यंत व्यापक थे। सड़क केवल आवागमन का साधन नहीं है; वह शिक्षा, स्वास्थ्य, बाजार, प्रशासन, रोजगार, संचार और सामाजिक गतिशीलता तक पहुँच का माध्यम बनती है।

एकात्म मानववाद के परिप्रेक्ष्य में यह योजना कई स्तरों पर महत्वपूर्ण है। पहला, यह अंत्योदय की दिशा में ठोस कदम थी, क्योंकि इसका लाभ सबसे अधिक उन गांवों और समुदायों को मिलना था जो भौगोलिक रूप से अलग-थलग और

विकास से वंचित थे। दूसरा, यह समग्र विकास का उदाहरण थी, क्योंकि सड़क से केवल व्यापार नहीं बढ़ता, बल्कि बच्चे स्कूल पहुँचते हैं, रोगी अस्पताल पहुँचते हैं, किसान बाजार तक पहुँचते हैं और ग्रामीण महिलाएँ सार्वजनिक जीवन में अधिक भागीदारी कर पाती हैं। तीसरा, यह योजना ग्रामीण भारत को विकास के केंद्र में रखने की नीति का सूचक थी।

इस योजना ने यह स्थापित किया कि विकास का अर्थ केवल महानगरों के लिए फ्लाईओवर बनाना नहीं, बल्कि छोटे और दूरस्थ गांवों को राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक धारा से जोड़ना भी है। इसी बिंदु पर यह योजना दीनदयाल उपाध्याय की ग्रामकेंद्रित संवेदना के निकट दिखाई देती है। हालांकि इसके क्रियान्वयन में राज्यों के बीच असमानता, गुणवत्ता संबंधी समस्याएँ और रखरखाव की कमी जैसी चुनौतियाँ रहीं, फिर भी इसकी मूल नीति-दृष्टि व्यापक रूप से एकात्म मानववाद के अनुरूप थी।

6.2 सर्व शिक्षा अभियान

सर्व शिक्षा अभियान 2001 में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया। इसका लक्ष्य केवल विद्यालयों की संख्या बढ़ाना नहीं था, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी था कि सभी बच्चे, विशेषकर गरीब, ग्रामीण, दलित, आदिवासी और लड़कियाँ, शिक्षा के अवसरों से वंचित न रहें। शिक्षा को मानव विकास, सामाजिक गतिशीलता और लोकतांत्रिक भागीदारी का आधार माना गया।

एकात्म मानववाद की दृष्टि से शिक्षा का महत्व अत्यंत केंद्रीय है, क्योंकि मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के विकास में शिक्षा की भूमिका निर्णायक है। यदि विकास को केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित न मानकर व्यक्तित्व के निर्माण के रूप में समझा जाए, तो शिक्षा उस समग्र विकास की आधारशिला बन जाती है। सर्व शिक्षा अभियान इसी अर्थ में मानव-केंद्रित नीति का उत्कृष्ट उदाहरण था।

यह योजना अंत्योदय की भावना से भी जुड़ी हुई थी, क्योंकि इसका प्रयास शिक्षा को उन वर्गों तक पहुँचाना था जो ऐतिहासिक रूप से वंचित रहे थे। विद्यालय अवसंरचना, नामांकन, शिक्षक नियुक्ति, बालिका शिक्षा, सामाजिक रूप से पिछड़े समूहों की भागीदारी, और समुदाय आधारित निगरानी जैसे पहलू इस योजना को केवल प्रशासनिक कार्यक्रम न रहकर सामाजिक न्याय के साधन में बदलते हैं।

फिर भी, आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो नामांकन बढ़ाने और वास्तविक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के बीच अंतर बना रहा। अनेक क्षेत्रों में शिक्षक-अभाव, अधोसंरचना की कमजोरी और सीखने के परिणामों की सीमाएँ सामने आईं। बावजूद इसके, यह योजना इस बात का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है कि वाजपेयी शासनकाल में शिक्षा को आर्थिक उत्पादकता के साथ-साथ मानवीय विकास के संदर्भ में भी देखा गया।

6.3 स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना

स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना भारत के चार प्रमुख महानगरों—दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता—को उच्च गुणवत्ता वाले राजमार्गों से जोड़ने की एक महत्वाकांक्षी योजना थी। इसे सामान्यतः आर्थिक अवसंरचना परियोजना माना जाता है, क्योंकि इसका उद्देश्य परिवहन लागत कम करना, बाजारों को जोड़ना, औद्योगिक विकास को गति देना और राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत करना था।

प्रश्न उठ सकता है कि ऐसी बड़ी अवसंरचनात्मक परियोजना का एकात्म मानववाद से क्या संबंध है। इसका उत्तर यह है कि यदि विकास को समग्र रूप में देखा जाए, तो राष्ट्रीय स्तर की अवसंरचना केवल पूँजी के प्रवाह का साधन नहीं होती; वह क्षेत्रीय संतुलन, रोजगार, संपर्क, निवेश और राष्ट्रीय समेकन को भी प्रभावित करती है। स्वर्णिम चतुर्भुज ने राज्यों और क्षेत्रों के बीच आर्थिक दूरी कम करने, माल और सेवाओं की आवाजाही बढ़ाने और विकास के नए अवसर पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एकात्म मानववाद के परिप्रेक्ष्य में इसे समग्र विकास और राष्ट्रीय एकात्मता की परियोजना के रूप में देखा जा सकता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि वाजपेयी सरकार ने ग्रामीण सड़कों और राष्ट्रीय राजमार्गों दोनों पर समानांतर ध्यान दिया। इससे यह संकेत मिलता है कि नीति केवल शहरी विकास या ग्रामीण विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि दोनों को जोड़ने वाली थी।

हालांकि इस परियोजना पर यह आलोचना भी की गई कि बड़े अवसंरचनात्मक निवेश का लाभ तत्काल रूप से कॉरपोरेट क्षेत्र और अपेक्षाकृत विकसित क्षेत्रों को अधिक मिला। फिर भी दीर्घकालिक दृष्टि से इसने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की क्षमता को बढ़ाया, जिसका प्रभाव छोटे शहरों, व्यापारिक गतिविधियों और क्षेत्रीय बाजारों पर भी पड़ा। इस प्रकार यह योजना विकास के एक व्यापक और आपस में जुड़े हुए दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करती है।

6.4 अंत्योदय अन्न योजना

यदि वाजपेयी शासनकाल में ऐसी किसी योजना की पहचान करनी हो जिसमें दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता हो, तो अंत्योदय अन्न योजना उसका प्रमुख उदाहरण है। यह योजना गरीबतम परिवारों को अत्यंत रियायती दर पर खाद्यान्न उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई थी। इसका मूल लक्ष्य था उन परिवारों तक खाद्य सुरक्षा पहुँचाना जो गरीबी की सबसे कठिन परिस्थितियों में जीवनयापन कर रहे थे।

"अंत्योदय" शब्द स्वयं उपाध्याय के दर्शन की केंद्रीय अवधारणा है। इस योजना में यह शब्द केवल प्रतीकात्मक नहीं था, बल्कि नीति की दिशा को स्पष्ट करता था। सरकार ने यह मान्यता दी कि सामाजिक न्याय का वास्तविक अर्थ उन लोगों तक पहुँचना है जो विकास के सामान्य कार्यक्रमों में भी पीछे छूट जाते हैं। खाद्य सुरक्षा के बिना गरिमामय जीवन और सामाजिक भागीदारी दोनों असंभव हैं। इस प्रकार अंत्योदय अन्न योजना मानव की मूल आवश्यकताओं को संबोधित करती है।

यह योजना इस बात का प्रमाण है कि वाजपेयी शासनकाल में जनकल्याण को केवल विकास-दर, निवेश या राजकोषीय संकेतकों से नहीं, बल्कि जीवन की मूल सुरक्षा से भी जोड़ा गया। हालांकि लाभार्थियों की पहचान, पीडीएस की अक्षमताएँ, रिसाव और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ इस योजना के क्रियान्वयन में मौजूद थीं, फिर भी इसकी वैचारिक प्रेरणा स्पष्ट रूप से अंत्योदय-आधारित थी।

6.5 राष्ट्रीय कृषि नीति, 2000

भारत का सामाजिक-आर्थिक ढाँचा लंबे समय तक कृषि पर आधारित रहा है और आज भी ग्रामीण जीवन, आजीविका तथा खाद्य सुरक्षा में कृषि की केंद्रीय भूमिका है। राष्ट्रीय कृषि नीति, 2000 ने कृषि विकास, उत्पादकता, विविधीकरण, कृषि-आधारित अधोसंरचना, किसानों की आय और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती पर बल दिया। यह नीति इस बात की स्वीकृति थी कि यदि भारत के विकास को टिकाऊ और समावेशी बनाना है, तो कृषि और किसान की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

एकात्म मानववाद के संदर्भ में कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि समाज की जीवनरेखा है। ग्राम, किसान और स्थानीय उत्पादन भारतीय समाज के आधार हैं। इसलिए कृषि-केंद्रित नीति का महत्व दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन में स्वाभाविक है। राष्ट्रीय कृषि नीति ने इसी दिशा में ग्रामीण आय, तकनीकी उन्नयन, सिंचाई, विपणन और कृषि विविधीकरण पर ध्यान दिया।

यह नीति स्वदेशी और विकेंद्रीकरण के विचारों से भी जुड़ती है। स्थानीय कृषि-क्षमता, क्षेत्रीय विविधता, पारंपरिक ज्ञान और उत्पादन प्रणाली को ध्यान में रखकर कृषि विकास की योजना बनाना एकात्म मानववाद की भावना के अनुरूप माना जा सकता है। हालांकि बाद के वर्षों में किसानों की आय, लागत और बाजार अस्थिरता जैसे प्रश्न बने रहे, फिर भी नीति-स्तर पर कृषि को राष्ट्रीय विकास के केंद्र में पुनर्स्थापित करने का प्रयास महत्वपूर्ण था।

7. एकात्म मानववाद और नीतिगत क्रियान्वयन: एक विश्लेषण

उपरोक्त योजनाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वाजपेयी शासनकाल में जनकल्याण और विकास को बहुआयामी रूप में समझा गया। इस अनुभाग में यह आवश्यक है कि योजनाओं को कुछ व्यापक वैचारिक मानदंडों पर एक साथ रखकर देखा जाए।

पहला, अंत्योदय का प्रत्यक्ष अनुप्रयोग। अंत्योदय अन्न योजना इस सिद्धांत का सबसे स्पष्ट उदाहरण है, किंतु केवल वही नहीं। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और सर्व शिक्षा अभियान भी वस्तुतः समाज के उन वर्गों तक राज्य की पहुँच बढ़ाने के उपकरण थे जो लंबे समय से संरचनात्मक वंचना का सामना कर रहे थे। अंत्योदय यहाँ केवल अनुदान या राहत तक सीमित नहीं, बल्कि अवसरों तक पहुँच के लोकतंत्रीकरण के रूप में सामने आता है।

दूसरा, समग्र विकास की नीति-दृष्टि। वाजपेयी सरकार ने सड़क, शिक्षा, कृषि, खाद्य सुरक्षा और राष्ट्रीय अवसंरचना जैसे विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ कार्य किया। इससे यह संकेत मिलता है कि विकास को एकांगी रूप में नहीं देखा गया। यदि केवल आर्थिक सुधारों पर ध्यान दिया जाता और सामाजिक क्षेत्र की उपेक्षा होती, तो यह नीति अधूरी रहती। लेकिन यहाँ मानव संसाधन, भौतिक अवसंरचना और जीवन-आवश्यकताओं के बीच संतुलन दिखाई देता है।
तीसरा, ग्रामीण भारत का महत्व। एकात्म मानववाद ग्राम और समुदाय को महत्व देता है। वाजपेयी शासनकाल की अनेक योजनाएँ ग्रामीण संपर्क, कृषि सुदृढ़ीकरण और गरीबों की खाद्य सुरक्षा पर केंद्रित थीं। यह ग्रामीण भारत को विकास की मुख्यधारा में लाने की कोशिश थी।

चौथा, राज्य और समाज के बीच साझेदारी। सर्व शिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रमों में समुदाय की भागीदारी, स्थानीय निकायों और राज्यों की भूमिका, तथा बहुस्तरीय क्रियान्वयन-तंत्र दिखाई देता है। यह अत्यधिक केंद्रीकृत मॉडल से कुछ भिन्न दिशा की ओर संकेत करता है, यद्यपि पूर्ण विकेंद्रीकरण का दावा नहीं किया जा सकता।
पाँचवाँ, विकास का मानवीय स्वर। वाजपेयी सरकार की नीति-भाषा में "विकास" मात्र सांख्यिकीय उपलब्धि न होकर एक राजनीतिक-सामाजिक दायित्व के रूप में उपस्थित था। यह पहलू दीनदयाल उपाध्याय के मानव-केंद्रित दर्शन से मेल खाता है।

8. आलोचनात्मक विश्लेषण

किसी भी सरकार की नीतियों का मूल्यांकन केवल उसके उद्देश्यों के आधार पर नहीं, बल्कि उसके परिणामों, सीमाओं और अंतर्विरोधों के आधार पर भी किया जाना चाहिए। वाजपेयी शासनकाल की जनकल्याणकारी योजनाएँ इस दृष्टि से मिश्रित लेकिन महत्त्वपूर्ण अनुभव प्रस्तुत करती हैं।

सकारात्मक पक्षों में सबसे पहले यह उल्लेखनीय है कि सरकार ने विकास को गरीब, ग्रामीण और वंचित समुदायों तक पहुँचाने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने ग्रामीण संपर्क बढ़ाया; सर्व शिक्षा अभियान ने शिक्षा को सामाजिक न्याय के एजेंडे से जोड़ा; अंत्योदय अन्न योजना ने खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में लक्षित हस्तक्षेप किया; राष्ट्रीय कृषि नीति ने किसानों की भूमिका को रेखांकित किया; और स्वर्णिम चतुर्भुज ने दीर्घकालिक आर्थिक क्षमता का निर्माण किया। इन सबके बीच एक साझा सूत्र यह था कि विकास को बहुस्तरीय और दीर्घकालिक प्रक्रिया के रूप में समझा गया।

दूसरा सकारात्मक पक्ष यह है कि वाजपेयी सरकार ने उदारीकरण और जनकल्याण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया। यह एक जटिल कार्य था, क्योंकि 1990 के दशक के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था बाजारोन्मुख दिशा में आगे बढ़ रही थी। ऐसे समय में केवल आर्थिक सुधारों पर केंद्रित रहना आसान था, किंतु सरकार ने सामाजिक योजनाओं को भी महत्व दिया। इस दृष्टि से यह शासन एकात्म मानववाद की उस समन्वयी प्रवृत्ति की याद दिलाता है जिसमें विरोधी ध्रुवों के बीच संतुलन खोजा जाता है।

किन्तु सीमाएँ भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। पहली सीमा क्रियान्वयन की असमानता थी। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में नीति की सफलता राज्यों की प्रशासनिक क्षमता, स्थानीय संस्थाओं की सक्रियता और निगरानी तंत्र पर निर्भर करती है। कई योजनाओं में क्षेत्रीय असमानताएँ सामने आईं।

दूसरी सीमा भ्रष्टाचार, रिसाव और लक्ष्य-निर्धारण की समस्याओं से जुड़ी थी। अंत्योदय अन्न योजना जैसी कल्याणकारी योजनाओं में लाभार्थी पहचान, सार्वजनिक वितरण प्रणाली की कमियाँ और वितरण-स्तर की अक्षमताएँ गंभीर प्रश्न बने रहे। इसी तरह शिक्षा और सड़क योजनाओं में भी गुणवत्ता, रखरखाव और संसाधन उपयोग की चुनौतियाँ थीं।

तीसरी सीमा वैचारिक और नीतिगत अंतर्विरोध की थी। एक ओर सरकार गरीबोन्मुखी और ग्रामीण विकासोन्मुखी योजनाएँ चला रही थी; दूसरी ओर उदारीकरण, निजीकरण और वैश्विक बाजारोन्मुख नीतियों के कारण असमानता बढ़ने की आशंकाएँ भी व्यक्त की जा रही थीं। इस कारण कुछ आलोचकों ने तर्क दिया कि एकात्म मानववाद के सामाजिक संवेदनशीलता वाले पक्ष और आर्थिक नीति के बाजारोन्मुख पक्ष के बीच पूर्ण सामंजस्य नहीं था।

चौथी सीमा यह रही कि विकेंद्रीकरण का आदर्श आंशिक रूप से ही साकार हुआ। यद्यपि योजनाओं में राज्यों और स्थानीय स्तर की भूमिका थी, फिर भी नीति-निर्माण का मूल ढाँचा पर्याप्त रूप से केंद्र-निर्देशित रहा। अतः यह कहा जा सकता है कि एकात्म मानववाद के विकेंद्रीकरण संबंधी तत्व की तुलना में अंत्योदय और समग्र विकास संबंधी तत्व अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हुए।

इन आलोचनाओं के बावजूद यह कहना उचित होगा कि वाजपेयी शासनकाल ने विचारधारा को प्रशासनिक भाषा में रूपांतरित करने का एक गंभीर प्रयास किया। उसकी योजनाएँ केवल नारे नहीं थीं; उनमें संस्थागत रूप और दीर्घकालिक असर दोनों दिखाई देते हैं।

9. तुलनात्मक अध्ययन

यदि वाजपेयी सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों की तुलना पूर्ववर्ती और परवर्ती सरकारों से की जाए, तो कुछ महत्वपूर्ण अंतर और विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं। नेहरूवादी काल में राज्य-नियोजित विकास, भारी उद्योग और सार्वजनिक क्षेत्र पर विशेष बल था। इस मॉडल की अपनी उपलब्धियाँ थीं, किंतु ग्रामीण संपर्क, लक्षित अंत्योदय और आधारभूत नागरिक सेवाओं के कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त विस्तार बाद में हुआ। 1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण ने विकास की भाषा बदल दी, जिसमें बाजार, निवेश और वृद्धि-दर पर अधिक जोर दिया जाने लगा। वाजपेयी काल ने इन दोनों के बीच संतुलन खोजने का प्रयास किया।

उसकी विशिष्टता यह थी कि उसने आर्थिक सुधारों को जारी रखते हुए सड़क, शिक्षा, खाद्य सुरक्षा और कृषि जैसे क्षेत्रों में ठोस हस्तक्षेप किए। यह दृष्टिकोण न तो शुद्ध राज्य-नियंत्रित समाजवाद था, न ही निर्बाध बाजारवाद। इसके बजाय इसमें एक मिश्रित नीति-दृष्टि दिखाई देती है, जिसमें बुनियादी अवसंरचना और सामाजिक कल्याण दोनों को महत्व दिया गया।

अन्य सरकारों की तुलना में वाजपेयी सरकार का एक महत्त्वपूर्ण अंतर यह था कि उसकी योजनाओं के पीछे वैचारिक रूप से “अंतिम व्यक्ति” की चिंता अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। “अंत्योदय” का राजनीतिक-प्रशासनिक उपयोग स्वयं इस तथ्य को दर्शाता है कि सरकार ने कल्याणकारी नीति को नैतिक और वैचारिक भाषा देने का प्रयास किया। यह दृष्टि दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन से निकटता स्थापित करती है।

10. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अटल बिहारी वाजपेई के शासनकाल में लागू की गई प्रमुख जनकल्याणकारी योजनाओं पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का उल्लेखनीय प्रभाव दिखाई देता है। यह प्रभाव हर योजना में समान तीव्रता से नहीं था, न ही वह शाब्दिक रूप में प्रकट हुआ; फिर भी नीतिगत प्राथमिकताओं, योजना-डिज़ाइन और विकास की समग्र दृष्टि में इसका स्पष्ट प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने ग्रामीण संपर्क और अवसरों के विस्तार के माध्यम से अंत्योदय तथा समग्र विकास को बल दिया। सर्व शिक्षा अभियान ने शिक्षा को मानव-केंद्रित विकास का आधार बनाया। अंत्योदय अन्न योजना ने उपाध्याय की अंत्योदय अवधारणा को सबसे प्रत्यक्ष नीति-रूप में साकार किया। राष्ट्रीय कृषि नीति ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और किसान को विकास के केंद्र में रखा। स्वर्णिम चतुर्भुज ने राष्ट्रीय एकीकरण और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए आधुनिक अवसंरचना का निर्माण किया, जो व्यापक अर्थ में समग्र विकास का भाग था।

समालोचनात्मक रूप से देखा जाए तो इन योजनाओं के क्रियान्वयन में कमियाँ थीं—क्षेत्रीय असमानताएँ, प्रशासनिक अक्षमताएँ, भ्रष्टाचार और उदारीकरण से उत्पन्न कुछ असंतुलन। फिर भी इन सीमाओं के आधार पर इनके वैचारिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता। वाजपेयी सरकार ने यह दिखाया कि भारतीय राजनीतिक चिंतन की वैचारिक अवधारणाओं को आधुनिक शासन-व्यवस्था में नीति-रूप दिया जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि वाजपेयी शासनकाल भारतीय सार्वजनिक नीति के इतिहास में उस चरण का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद को व्यवहारिक और संस्थागत रूप देने का गंभीर प्रयास हुआ। यह प्रयास पूर्ण नहीं था, परंतु महत्त्वपूर्ण अवश्य था। भारतीय लोकतंत्र में विचार और शासन के संबंधों को समझने के लिए यह कालखंड एक महत्वपूर्ण अध्ययन-विषय बना रहेगा।

संदर्भ सूची

1. Upadhyaya, D. (1965). *Ekatma manavvad* [Integral humanism]. Suruchi Prakashan.
2. Vajpayee, A. B. (2004). *India's economic reforms and development*. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting.
3. Government of India. (2000). *National agriculture policy*. Ministry of Agriculture.
4. Government of India. (2000). *Prime Minister Gram Sadak Yojana guidelines*. Ministry of Rural Development.
5. Government of India. (2001). *Sarva Shiksha Abhiyan: Framework for implementation*. Ministry of Human Resource Development, Department of Elementary Education and Literacy.
6. Planning Commission. (1998–2004). *Annual reports*. Government of India.
7. Sharma, K. (2010). *Indian political thought*. Pearson Education.
8. Bhargava, R. (Ed.). (2008). *Politics and ethics of the Indian Constitution*. Oxford University Press.
9. Jaffrelot, C. (1996). *The Hindu nationalist movement and Indian politics: 1925 to the 1990s*. Penguin Books.
10. Andersen, W. K., & Damle, S. D. (1987). *The brotherhood in saffron: The Rashtriya Swayamsevak Sangh and Hindu revivalism*. Vistaar Publications.